होम / होम /
मैं पाप पर विजय पाने की शक्ति कैसे पाऊँ?

पाप पर विजय की शक्ति

मैं पाप पर विजय पाने की शक्ति कैसे पाऊँ?

आस्था में पीछे हटना वास्तव में क्या मायने रखता है?.. मैं पाप पर विजय पाने की शक्ति कैसे प्राप्त कर सकता हूँ?

शालोम, हमारे प्रभु यीशु मसीह का नाम अधिक से अधिक आशीर्वाद पाए… आइए आज हम शास्त्रों का अध्ययन करें।

आज का सवाल है: “पीछे हटना” का अर्थ क्या है? कोई व्यक्ति जिसे आप जानते हैं और आप उससे पूछते हैं, “क्या आप उद्धार पाए हैं?” वह कह सकता है, “हाँ, मैंने उद्धार पाया था, लेकिन मैं पीछे चला गया…” यदि आप आगे पूछें कि वह कैसे पीछे गया, वह कह सकता है, “मैंने अपनी कामुक इच्छाओं का पालन किया, इसलिए मैं फिसल गया और व्यभिचार में लिप्त हो गया।”

यदि आप भी इसी स्थिति से गुजर रहे हैं, मेरे मूल्यवान भाई/बहन, मैं आज आपको बताना चाहता हूँ कि आप वास्तव में पीछे नहीं गए… बल्कि आप कभी उद्धार नहीं पाए थे! इसलिए आपको उद्धार की

आवश्यकता है।

मैं आज बताऊँगा कि कोई व्यक्ति जो पीछे गया है, वह कैसे होता है।

वह व्यक्ति जिसने पूरी तरह से यीशु मसीह को अपने जीवन का प्रभु और उद्धारकर्ता स्वीकार किया है, जिसने पूरी निष्ठा से संसार को अपने कर्मों में छोड़ दिया है, अपने क्रूस को उठाया और यीशु का पालन किया, और सही बपतिस्मा में बपतिस्मा लिया… ऐसे व्यक्ति ने वास्तव में उद्धार प्राप्त कर लिया है।

आध्यात्मिक दृष्टि से, वह व्यक्ति पाप के मामले में मृत है और धार्मिकता के मामले में जीवित है। वह मृत्यु से अंधकार में प्रवेश करने से बाहर निकल चुका है और सभी अंधकारपूर्ण कृत्यों को छोड़ चुका है। वह सुरक्षित हाथों में है—खुद यीशु के हाथों में। प्रभु यीशु उसे पाप और संसार पर विजय पाने की अद्भुत शक्ति देते हैं, पवित्र आत्मा द्वारा मुहरबंद करके।

ऐसे व्यक्ति को शैतान अब किसी भी तरह से भगवान के हाथों से
छीन नहीं सकता। उसका जीवन मसीह में छिपा हुआ है।
कुलुस्सियों 3:3 – “क्योंकि तुम मर चुके हो, और तुम्हारा
जीवन मसीह में परमेश्वर में छिपा हुआ है।”

ऐसे व्यक्ति को पाप पर विजय पाने की अद्भुत शक्ति दी जाती है, जिससे पाप करना उसका विकल्प बन जाता है, आवश्यकता नहीं। जैसे कोई व्यक्ति सड़क पर जूते खरीदने के लिए मजबूर नहीं है—यह उसके निर्णय पर निर्भर करता है कि वह खरीदता है या नहीं। शैतान भी उसी प्रकार किसी उद्धार पाए हुए व्यक्ति को पाप में फँसाने की शक्ति नहीं रखता।

लेकिन जो व्यक्ति उद्धार नहीं पाया है, उसके लिए पाप एक कानून की तरह है—यह विकल्प नहीं है। उसे करना ही होगा, चाहे वह चाहे या न चाहे। वह पाप का दास है। कभी-कभी वह थोड़े समय के लिए खुद को रोक सकता है, लेकिन अंततः वह फिर से उसी पाप में लिप्त हो जाता है। इसलिए ऐसे व्यक्ति को लगता है कि उसकी इच्छाएँ उसे नियंत्रित करती हैं।

इसीलिए आप सुनते हैं लोग कहते हैं: “मैं अपनी इच्छाओं को नियंत्रित नहीं कर पा रहा हूँ। मैं व्यभिचार कर रहा हूँ, मद्यपान छोड़ नहीं पा रहा, धूम्रपान छोड़ नहीं पा रहा, दुनिया की संगीत सुनना नहीं छोड़ पा रहा।” ऐसे व्यक्ति मसीह में नहीं हैं।

यह असफलता इस कारण होती है कि उसने अभी तक खुद को पूरी तरह से यीशु को समर्पित नहीं किया। वह उद्धार चाहता है, लेकिन अपने पुराने जीवन के कुछ हिस्सों से जुड़ा हुआ है। जब तक वह पूरी तरह

से संसार और उसके मोहों को छोड़ने का निर्णय नहीं लेता, पाप पर विजय पाने की शक्ति उसके भीतर नहीं उतर सकती।

जो व्यक्ति उद्धार प्राप्त कर चुका है और उसके भीतर पाप पर विजय की शक्ति है, वह कभी-कभी छोटी-छोटी गलतियों के दौर से गुजर सकता है। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि वह पूरी तरह पीछे चला गया है। वह केवल अपनी प्रार्थना का समय कम कर सकता है, दूसरों की सेवा कम कर सकता है, लेकिन उसने अपने जीवन से पाप को पूरी तरह नहीं अपनाया।

ऐसे व्यक्ति को “आस्था में पीछे जाना” कहते हैं।
लेकिन जो व्यक्ति पहले ही उद्धार नहीं पाया है और अपने पाप में फँसा हुआ है, उसके लिए यही पीछे हटना नहीं है—वह केवल वास्तविक उद्धार प्राप्त करने के लिए तैयार नहीं था।

यदि कोई पूरी तरह से उद्धार प्राप्त कर चुका है और पाप पर विजय की शक्ति उसके भीतर उतर चुकी है, और फिर भी उसने जानबूझकर पाप का चुनाव किया, तो शास्त्र स्पष्ट रूप से कहता है कि ऐसा व्यक्ति मसीह को दोबारा क्रूस पर चढ़ाने के समान है। ऐसे व्यक्ति की पश्चाताप करने की शक्ति समाप्त हो जाती है।

2 पतरस 2:20-22 – “क्योंकि जो लोग दुनिया की मैल से बचकर

प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह को जानते हुए भी फिर फँस जाते हैं, उनकी अंतिम स्थिति पहले से भी बुरी हो जाती है।”

इब्रानियों 6:4-6 – “क्योंकि जो लोग एक बार प्रकाश पाकर, स्वर्गीय अनुभव प्राप्त कर, पवित्र आत्मा के साथ भागीदार
बने, परमेश्वर के वचन और आने वाली शक्तियों का स्वाद चख
चुके, और फिर गिर पड़े, उन्हें दोबारा पश्चाताप कराना असंभव है।”

यदि आप पूरी तरह उद्धार प्राप्त कर चुके हैं, और आपके भीतर पाप पर विजय की शक्ति है, तो अपने आप को पीछे न हटने दें। व्यभिचार, मद्यपान, गर्भपात या किसी भी पाप में फिर से न फँसें। यह शक्ति—पाप पर विजय की शक्ति—ईश्वर की दी हुई कृपा है। इसे हल्के में न लें।

यदि आप अब पश्चाताप करना और पूरी तरह उद्धार प्राप्त करना चाहते हैं, अपने मन और कर्मों से पाप और संसार को त्यागने का दृढ़ निश्चय करें। किसी भी भौतिक या मनोरंजक वस्तु से अपने आपको अलग करें, और सही बपतिस्मा में बपतिस्मा लें। यही वह क्षण है जब आप अनुभव करेंगे कि कैसे ईश्वर की शक्ति आपको पाप पर विजय पाने में समर्थ बनाती है।

बहुत से लोग जो स्वयं को ईसाई कहते हैं, उन्होंने यह शक्ति

प्राप्त नहीं की है। यही कारण है कि उनके लिए पाप पर विजय पाना कठिन है। मसीह का अनुभव करना मतलब है उस शक्ति का अनुभव करना। बिना इस शक्ति के, पाप पर विजय असंभव है।

भगवान आपको आशीर्वाद दें।
मरान अथा!

यदि आप चाहें, मैं इसे और भी आसान और पढ़ने में सहज हिंदी में, ताकि हर वाक्य जीवन के उदाहरणों से जुड़ा लगे, तैयार कर सकता हूँ।

क्या मैं ऐसा कर दूँ?

Share on:
WhatsApp